स्थिर वस्तु चित्रण (Still Life Painting)

यह चित्रकला के क्षेत्र में प्रवेश करने का पहला द्वार है, चित्रण का एक विषय जिसमें स्थिर वस्तुओं का संयोजन किया जाता है उसे सामने रख कर उसे वैसा ही बनाना होता है जैसी वह दिखाई देती है, जैसे—फल, फूल, बर्तन व अन्य सामग्री। इन्हीं निर्जीव वस्तुओं के चित्रण को कलाकार सामने रखकर हुबहु बनाता है, स्थिर वस्तु चित्रण (Still Life Painting) कहलाता है। इस चित्रण के लिए निर्जीव वस्तुओं का संयोजन होता है जिसमें विभिन्न आकृतियाँ, जैसे-गोल, चौकोर, लम्बी सभी तरह की आकृतियाँ, जैसे—प्लेट, पुस्तक, बोतल कोई भी फल आदि जिससे बनाने वाले विद्यार्थियों को विभिन्न आकृतियों का ज्ञान हो सके। सामने रखी वस्तुओं को परख कर छाया प्रकाश, प्रमाण दूरी आदि का ज्ञान हो जाता है।

स्थिर वस्तुओं के चित्रण की विधि

सामने रखी वस्तुओं से छात्रों को नेतृज्या (Perspective) का ज्ञान हो जाता है। वस्तुओं के प्रत्येक अंग को, बायीं आँख बन्द करके केवल सीधी आँख से बाँह को सीधा करके नापना है। समस्त रेखायें नापने में आपकी पेंसिल की स्थिति या तो पृथ्वी पर लम्ब रहेगी या पृथ्वी के समान्तर अपनी बाँह बिल्कुल सीधी करके वस्तु की रेखाओं को नापिये। आपकी कोहिनी पर 180° कोण के अतिरिक्त कोई और कोण नहीं बनना चाहिए। पहले ये देखिये कि सामने रखा मॉडल, ऊँचाई में अधिक बड़ा है अथवा चौड़ाई में मॉडल का ऊँचाई और लम्बाई में जो अनुपात है वो ज्ञात करना है।

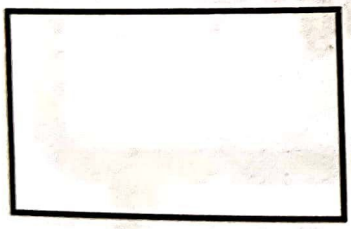

यदि ऊँचाई से चौड़ाई अधिक है तब कागज को इस स्थिति में रखिए। जैसे— स्थिर वस्तु चित्रण,रेखाचित्र-1

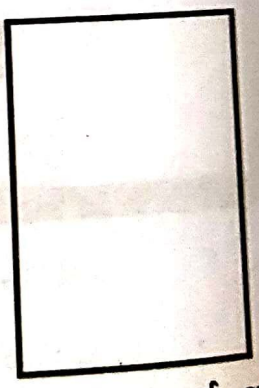

यदि चौड़ाई से लम्बाई अधिक है तो कागज को इस स्थिति में रखना है। जैसे— स्थिर वस्तु चित्रण, रेखाचित्र-2

सबसे पहले चित्र में कागज के किनारे के समान्तर एक रेखा खींच लेनी चाहिए। चित्र में इसे धरती रेखा या (Ground line) कहते हैं। इसके बाद पूरा मॉडल नाप कर बनाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

रचनात्मक प्रतिपादन (Creative Rendering)

रूपान्तरित करना अथवा सामने रखे पदार्थों को साधारणीकरण द्वारा कलाकार अपनी इच्छा से अंलकारिक रूप प्रदान कर एक-दूसरे के साथ संयोजन द्वारा बांधकर आकर्षक अनुअंकन का निमार्ण करता है उसे क्रियेटिव रेंडरिंग कहते हैं।

अथवा

चित्र में रचनात्मक प्रतिपादन वह है जिसमें कलाकार पूर्णरूप से स्वतन्त्र होता है। वह अपने अनुभवों और अपनी मौलिक प्रतिभा से रेखांकन करता है। इसमें वह वस्तुओं को प्रत्यक्ष देखकर चित्रण नहीं करता, परन्तु प्रत्यक्ष वस्तुओं के संयोजन को अपने रूपों में ढालता है। इसमें कलाकार को अपनी रचनात्मक क्षमता उजागर करने का अवसर मिलता है, प्रत्यक्ष में रखी हुई, वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप तो कैमरा भी दे सकता है परन्तु कलाकार अपनी कल्पना-शक्ति व रचनात्मक-शक्ति से जिन रूपों का प्रतिपादन करता है वही **क्रियेटिव रेंडरिंग** (Creative Rendering) कहलाती है।

दृश्य जगत का अथवा ऑब्जैक्ट्स का जब सादृश्य के आधार पर चित्रण होता है तब वह यथार्थ चित्रण कहलाता है। परन्तु जब दृश्यमान जगत अथवा ऑब्जैक्ट्स को सरलीकृत रूपों में ढालकर निजी कल्पना से मौलिकता का समावेश किया जाता है तो दृश्यमान वस्तु का मौलिक महत्व समाप्त हो जाता है। इसके अन्तर्गत कलाकार किसी भी प्रकार के पोत अथवा तान संयोजित कर सकता है। यहाँ कलाकार की स्वतन्त्र कल्पना उसकी अभिव्यक्ति में सहायक बनती है यही क्रियेटिव रेंडरिंग कहलाती है।

Scanned with CamScanner